arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:06 PM Page 166

सुहास बहुलकर

आदर्श पुरुष: नानाजी

नानाजी प्रभु राम को मनुष्य के रूप में देखते थे। वह मंदिर की बजाय प्रेरणास्थलों के हिमायती थे। इस नजरिए से ही उन्होंने अपने राम दर्शन का सपना साकार किया।

दुनिया में कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जो भव्य-दिव्य सपने देखते है और विषेश रूप से जो समाज के लिए होते है। ऐसे ही एक निर्मोही त्यागी एवं ऋषितुल्य व्यक्ति का नाम है नानाजी देशमुख। ऐसे नानाजी का एक सपना अर्थात राम दर्शन। रामायण के नैतिक संदेश देने वाले इस प्रकल्प के लिए वे कलाकार, चित्रकार की खोज देशभर में कर रहे थे। 1995 में चतुरंग जीवन गौरव पुरस्कार महाराष्ट्र के जानेमाने लेखक, साहित्यकार और नाटककार पु. ल. देशपांडे को प्रदान करने हेतु मुंबई में आये थे। उन्होंने चतुरंग के विद्याधर निमकर से मुझसे मिलने की इच्छा व्यक्त की। उस वक्त वे 79 वर्ष के थे। पहली मुलाकात में नानाजी ने अपना सपना मेरे समक्ष रखा। उन्होंने कहा श्रीराम एक आदर्श मानव थे। लेकिन हम किसी भी आदर्श व्यक्ति को भगवान बनाने में माहिर है। महापुरूष को भगवान बनाया कि हमारी जिम्मेदारी खत्म। इसलिए प्रभु राम को भगवान नही, मनुष्य रूप में दिखाना चाहिये। हमे मंदिर नही, प्रेरणास्थल चाहिये, जो सारे मानवमात्र के लिए प्रेरणादायी हो। क्या आप ऐसा कुछ करना चाहेंगे?

अचानक यह सवाल सुनते ही मैं कुछ क्षण के लिए असमंजस में पड़ गया। मैंने जे. जे. स्कूल ऑफ आर्टस् से स्वेच्छानिवृत्ति ली थी। स्वतंत्र चित्रकार के रूप में ढेर सारे पेन्टिग बनाने का मेरा सपना था। यह बताते ही उन्होंने पूछा कि ठीक है, आप पेन्टिग करेंगे लेकिन उसका आगे क्या होगा? इसके बाद उन चित्रों की प्रदर्शनी होगी, उन चित्रों की बिक्री भी होगी। ऐसा कहने पर उन्होंने जानना चाहा कि चित्रों का मूल्य और उसे खरीदनेवाले कौन होते है? उनकी इस प्रतिक्रिया से मैं सोच में पड़ गया। नानाजी ने कहा कि यानी आपके चित्र सिर्फ अमीर लोग ही खरीद और देख सकते है। क्या आपको नही लगता कि इस देश की गरीब और सामान्य जनता को भी आपकी कलाकृति का आनंद मिले। उसी क्षण मेरा मन विचलित हुआ।

इस मुलाकात से मेरा जीवन ही बदल गया। नानाजी के रामदर्शन के सपने में मैं किस तरह से शामिल हो गया, इसका मुझे पता ही नही चला। मैं, मेरा परिवार, विद्यार्थी साथी-सहयोगी और मित्र अगले छह वर्ष एक अलग प्रकार के धुन में जिये। प्रारंभ में विद्वानों के साथ बैठकें होती थी और हर समय मेरा सवाल रहता था कि प्रदर्शित होने वाले प्रसंगों में राम, लक्ष्मण और सीता की आयु क्या है? अनेक विद्वान आये और गये जवाब नही मिला। एक बार रामायण के सुप्रसिद्ध प्रवचनकार बेहद गुस्सा हुए और कहा कि कैसे कमबख्त कलाकार हो। भगवान की कोई आयु होती है? इस पर मैं भी थोड़ा आक्रामक हुआ तो तत्काल नानाजी ने अपनी नजरों से इशारा कर विषय बदल दिया

रामायण के व्यक्तित्वों पर विचार करते समय नानाजी इसमें रम जाते थे। भगवान राम का सांवला रंग बताते हुए मराठी भावगीत के शब्द याद आते थे। एक बार सीता कैसी होगी, इसका वर्णन करते हुए उन्होंने तुरंत कहा, हेमा मालिनी जैसी सुंदर होनी चाहिए। ऐसा कहते ही हम सब एक क्षण के लिए स्तब्ध हो गये। उसके बाद सीता को अभिनेत्री के साथ जोड़ना उचित नही लगता, इस बात को ध्यान में लाया जिससे नानाजी ने तत्काल स्वीकार किया। परशुराम के प्रसंग में लक्ष्मण के हाथ की मुठ्ठी क्रोध से पक्की बंधी दिखाई थी। स्वाभाविक ही भुजाओं की शिराएं तनी हुई थी। उसके लिए मॉडेल तयार करके उसमें सुधार करेंगे, ऐसा कहते ही 81 वर्षीय नानाजी तड़ाक से उठ खड़े हुए। अपना कुरता उतारा और लक्ष्मण जैसी पोजिशन लेकर हाथ की मुठ्ठियाँ कसकर अपनी भुजाओं की शिराएं दिखाते हुए कहने लगे, करो, जो सुधार करना है करो। सिर्फ भुजाएं और उसकी शिराएं मेरे से 65 वर्ष कम आयु के युवा की तरह बनाओ।

हर समय हुई चर्चा और किए गये निर्णय नानाजी को एकदम याद रहते थे। समय को लेकर एकदम जागरूक और पाबंद थे। बढ़ती आयु के कारण हाथ में हलक-सा कंपन होते हुए भी वे सारे काम तुरंत अपनी डायरी में लिखकर रखते थे, अथवा अपने निजी सहायक हेमंत को बता देते थे। एक बार ठंड के दिनों में चित्रकूट में रिलीफ लगाने का काम चल रहा था। उन दिनों में एक दिन इतने कड़ाके की ठंड पड़ी कि दोपहर के बारह बजे भी काम करना असंभव हो गया था। इतने में नीलेश ने लकड़ी इकट्ठा कर आग जलाई और काम शुरू हो गया। ठंढ में काम बंद होगा, इस धारणा के साथ नानाजी ने हेमंत को गाडी लेकर भेजा और हमे लेकर आने को कहा। केवल हम आग जलाकर काम कर रहे है और अन्य सभी काम बंद है, यह हेमंत ने नानाजी को सूचित किया। थोड़ी देर बाद उसी भीषण ठंढ में गरम कपडे पहनकर, शॉल ओढ़कर, कानटोपी लगाकर हमारी तारीफ करने के लिए आ पहुंचे। साथ में गरम-गरम समोसे और जलेबी लेकर आये और हमे बड़े स्नेह से आग्रह करके खिलाई। बाद में मीटिंग में नानाजी ने कहा कि यहां के सब लोगों ने ठंढ के कारण काम बंद किया, लेकिन मुंबई से बहुलकरजी और उनके सहयोगी इतनी ठंढ की आदत न होते हुए भी काम करते रहे।

प्रभु रामचंद्र साढ़े दस वर्ष चित्रकूट में रहे, ऐसी श्रद्धा है, तब यह वनवास ही था, लेकिन यह भी एक प्रकार का वनवास ही था। हमारे निवास की व्यवस्था रामदर्शन के निकट ही की गई थी। भोजन व्यवस्था 5 किलोमीटर दूर। स्कू ओर कील की जरूरत हो तो 60 किलोमीटर दूर सतना जाना पड़ता था। गरमी के मौसम में तापमान 50 डिग्री पार कर जाता, सर्दी के दिनों में जबरदस्त ठंढ और बरसात में मूसलाधार बारिश। बरसात में रास्ता किसे कहें यह प्रश्न ही था। बिजली तीन-तीन महीने गायब। दूरभाष की भी अच्छी सुविधा नही थी। इसप्रकार की दिक्कतों से रास्ता निकालते, हमारा ध्यान रखते समय नानाजी और उनके कार्यकर्ताओं को बहुत परेशानियां झेलनी पड़ती थी। हमारे लिए टाईम टेबल के अनुसार काम न हो पाना और फिर उसका मनस्ताप यह एक आम बात बन गई थी। लेकिन नानाजी नाराज हुए बिना समस्या का समाधान करते थे। फिर भी दिक्कतें और बाधाएं ऐसी थी कि तीन वर्ष के निर्धारित अवधि में पूरा होने वाले इस प्रकल्प को पूरा होने में 5 वर्ष 8 महीने लग गये। एक बार में ठंढ के दिनों में मुंबई आने के लिए सतना रेल्वे स्टेशन पर पहुँचा और पहुंचते ही घोषणा सुनी कि घने कोहरे के कारण से ट्रेनों की आवाजाही विलंब से हो रही है। इसलिए आज आनेवाली हावड़ा एक्सप्रेस कल आयेगी। बरसात के खत्म होते ही असंख्य प्रकार के छोटे बड़े कीड़े-मकोड़े शाम को दिया जलाते ही इकट्ठा हो जाते थे। इन कीड़े-मकोड़े से हम परेशान होकर मायूस हो जाते थे, लेकिन नानाजी हमेशा उत्साह में रहते थे। वे स्वयं काम करते थे और अन्यों को काम करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। वे हम कलाकारों का मन संभालते थे। एक बार दोपहर भोजन के लिए मैंने पांच किलोमीटर दूर नानाजी के आवास सियाराम कुटीर में जाने का निश्चित किया था। लेकिन कार्य की व्यस्तता के कारण वहां जाना असंभव सा लगते ही मैंने बिस्किट मंगवाये और नानाजी को संदेश भिजवाया कि हमें भूख नही है और काम भी खत्म करना है, हमारी राह मत देखना और हम काम में व्यस्त हो गये। थोड़े ही समय में नानाजी वहां हाजिर हुए और आते समय हम सबके लिए पूरा भोजन लेकर आये और मुझसे कहा कि आपका काम पूरा कीजिये। फिर हम साथ मिलकर भोजन करेंगे। मैं क्या कहूँ, यही मेरी समझ में नही आ रहा था । आज भी उस प्रसंग की याद आती है तो मेरी आंखे नम हो जाती है।

राम दर्शन का उद्घाटन 11 नवम्बर 2000 को संपन्न हुआ । किन्तु उसके बाद मैं और नानाजी उससे इतना जुड़े रहे कि जब नानाजी चित्रकूट में रहते थे, तब दिन में एक बार जरूर राम दर्शन जाते और मैं भी कभी कभी यूं ही तो कभी कोई काम निकाल कर राम दर्शन के लिए बार-बार चित्रकूट जाता था। ऐसे ही एक बार चित्र में सुधार करते समय नानाजी वहाँ पहुंच गये और वहां पर बैठकर देखते रहे। मेरा काम पूरा होते ही मैंने उन्हें उसे देखने को कहा, उस पर उन्होंने जो कहा वह सुनकर मैं आपादमस्तक हिल गया। नानाजी ने कहा कि वहुलकरजी, इमर्जेन्सी के वक्त जयप्रकाशजी के ऊपर का जो लाठीचार्ज मैंने झेला, उससे मेरी एक आँख का दिखना खत्म हुआ था। तबसे मैं एक ही आँख से काम चलाता था, लेकिन अब मुझे कुछ भी दिखाई नही देता। मैं अंधा हो गया। आपने जो किया, वो मुझे नही दिख रहा है। वे गर्दन हिलाते रहे। धीरे-धीरे उन्हें कम सुनाई देने लगा। शरीर कमजोर होने लगा। लेकिन अंतिम क्षण तक स्मरणशक्ति और तेजस्वी विचार कायम थे। मुंबई पर 26/11 का आंतकी हमला हुआ और नानाजी का दूसरे ही दिन फोन आया। उनका पहला ही सवाल था, आप सभी सुरक्षित तो है ना? नानाजी का 27 फरवरी 2010 को निधन हुआ और निधन के तीन दिन पूर्व ही वे राम दर्शन में होकर आये थे। बाद में वहां के व्यवस्थापक का मुझे फोन आया और वे बोले, अभी-अभी नानाजी आये थे और पूछ रहे थे कि आप कब आ रहे हैं?

उनका 84वाँ जन्मदिन आया, तब उन्होंने कहा कि मैं देहदान करनेवाला हूँ। मृत्यु के बाद देह का इस्तेमाल मेडिकल के छात्रों के लिए हो, ऐसी उनकी इच्छा थी। मृत्यु के बाद नानाजी की देह दिल्ली लाई गई तो वहां पता चला कि नानाजी ने देहदान करनेवाली दधीचि संस्था को 11 हजार रूपये दिये थे और कही पर भी मेरी मृत्यु हुई तो उनका देह निकटवर्ती मेडिकल कॉलेज में पहुँचाया जाये, ऐसा उन्होंने कह कर रखा था। उसके व्यय हेतु ये रूपये दिये थे। नानाजी की देह दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में दिया गया ।

जिंदगीभर स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाले स्वातंत्र्यवीर सावरकर का आत्मार्पण दिन और स्वतंत्र देश में समाज के लिए जीवन समर्पित करनेवाले नानाजी देशमुख का स्मृतिदिन, दोनों एक ही दिन हो। क्या इसे एक संयोग ही नही समझा जाना चाहिये? ■

लेखक परिचय

लेखक देश के जाने-माने शिल्पकार व चित्रकार हैं। नानाजी से पहली ही मुलाकात में इतने प्रभावित हुए कि सब कुछ छोड़ सुदूर चित्रकूट में रामदर्शन का निर्माण करने जा पहुंचे।